रणनीतिक संचार संदर्भ सामग्री - भाग १

प्रभावी कहानी कैसे लिखें?

VIKAS SAMVAD

लेखन

सचिन कुमार जैन

सह लेखन और संपादन

पूजा सिंह, राकेश कुमार मालवीय, विश्वंभर त्रिपाठी,
संदीप नाईक, निधि तिवारी, जावेद अनीस, राजेश भदौरिया,
सत्यम पांडेय, उपासना बेहार, अनिल धीमान,
कार्तिक शर्मा, पिंकी वर्मा

मार्गदर्शन

चिन्मय मिश्र, गुरुशरण सचदेव

> सामाजिक संस्था या कार्यकर्ता के लिए कहानी केवल कहानी नहीं होती बल्कि वह 'बदलाव की कहानी' होती है।

उसमें कुछ परिणाम और संदेश निहित होते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता के लिए कहानी का अर्थ है वास्तविक और जमीनी घटनाक्रम की रोचक प्रस्तुति। ऐसी कहानी के चार तत्व होते हैं। पहला विचार, दूसरा समुदाय एवं पात्र, तीसरा परिवर्तन की पहल और चौथा परिणाम अथवा निष्कर्ष। सामाजिक संस्था को कहानी इसलिए कहनी चाहिए ताकि उसकी बात और उसके द्वारा किए जा रहे कार्य किसी खास भौगोलिक इलाके में सिमट कर न रह जाएं तथा व्यापक समाज से जुड़ सकें।

किसी सामाजिक संस्था को कहानी लिखते समय कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिएः काम के दौरान उसके सामने क्या समस्या आईं? उसका किस प्रकार सामना किया गया? इस दौरान कौन से तथ्य और आंकड़े उभरकर आए? आंकड़ों और तथ्यों का किस प्रकार इस्तेमाल किया गया? एक अच्छी कहानी लिखने के कुछ बुनियादी नियम हैंः अपने आसपास की घटनाओं पर सजग दृष्टि रखें, कहानी के लिए एक बेहतर विषय चुनें, कहानी में संदेश उभरकर आना चाहिए, शीर्षक एवं शुरुआत रोचक होनी चाहिए जो खुद को पढ़े जाने के लिए प्रेरित करे, कहानी को बार–बार पढ़कर आवश्यक संपादन करना चाहिए जिससे कथ्य में कसावट हो।

प्रभावी कहानी कैसे लिखें?

कहानी लिखने का मकसद 'कहना' नहीं होता, कहानी का मकसद होता है 'दिखाना'; इसका मतलब है कि हम किसी विषय को 'लिखते नहीं हैं'; हम उसका 'चित्र' बनाते हैं!

कोई भी व्यक्ति 'कहानी' को पढ़ता नहीं है। वह कहानी में दर्ज घटनाओं को 'देखता' है, पात्रों से मिलता है और उसके परिणाम/संदेश से खुद को जोड़ता है।

परिचय

एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में हमने सोचा है कि समाज में, लोगों के जीवन और व्यवहार में कहीं कुछ बदलाव लाना है। उद्देश्य यही है कि दुनिया को बेहतर बनाया जा सके।

एक ऐसी दुनिया जिसमें बच्चे खुश हों, उनके साथ किसी भी तरह का शोषण न हो। महिलाओं के साथ किसी भी तरह की हिंसा न हो और वे अपने वजूद को पूरी स्वतंत्रता के साथ महसूस कर सकें, उसे जी सकें। जाति या रंग या काम के आधार पर कोई भेदभाव न हो। आर्थिक आधार पर असमानता न हो। हमारे जीवन में हवा, पानी, पहाड़ों, पशु–पक्षियों, वनस्पतियों का बहुत महत्व है। समाज में ऐसा कोई काम या योजना न हो, जिससे जैव विविधता को नुकसान पहुंचता हो।

क्या सब सामाजिक कार्यकर्ता और संस्था के रूप में इसी सपने को साकार करने के लिए काम नहीं कर रहे हैं? बिलकुल, हम इसी सपने को साकार करना चाहते हैं। अपने काम को लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए बहुत जरूरी है

कि हम अपने सपने को और भी कई लोगों का, समूहों का, अन्य कई संस्थाओं का, सरकार और मीडिया का भी सपना बना दें। जब एक ही सपना कई लोग और संस्थाएं देखती हैं, तब वह सचमुच साकार होने लगता है। अगर हमारा सपना केवल हमारी आँखों, दिल और दिमाग तक सीमित रह गया, तो वह पूरा न हो पाएगा।

अपने सपने को कई और आँखों, दिल और दिमाग तक पहुंचाने के लिए जरूरी है कि हम अपनी, अपने विषय और समुदाय से जुड़ी कहानियों को कहें, लिखें, उसे बताएं, सुनाएं! अगर सामाजिक कार्यकर्ता और सामाजिक नागरिक संस्थाओं के प्रतिनिधि सजगता के साथ हर रोज यह देखने का प्रयास करें कि समाज में, लोगों में क्या बदलाव आ रहा है और क्यों आ रहा है, तो कहानी पहचानी जा सकती है। या फिर कोई समस्या बहुत जटिल है, और चुनौतियां बनी हुई हैं, तो क्यों और किसके कारण से बनी हुई हैं, तो भी कहानी पहचानी जा सकती है।

सामाजिक कार्यकर्ता के लिए कहानी का मतलब

सामाजिक कार्यकर्ता के लिए कहानी लेखन का मतलब है प्रस्तुति और संवाद का एक ऐसा स्वरुप, जो उसके जमीनी अनुभव की रचनात्मक और रोचक प्रस्तुति होता है; जो वास्तविक समस्या और वास्तविक पहल पर आधारित होती है।

जब हम एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में कहानी कहने का काम करते हैं, तब यह हमेशा ध्यान रखना जरूरी है कि समाज और सामाजिक बदलाव के प्रति उनका नजरिए क्या है? हम बदलाव को किस तरह मापते हैं? वास्तव में उनके लिए कहानी कहने का एक उद्देश्य यह भी है कि समाज सामाजिक कार्यकर्ताओं और उक्त संस्थाओं की भूमिका को जान सके। एक मायने में कहानियां कहना सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका और जिम्मेदारी का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कहानी का लेखन किनके लिए?

सामाजिक कार्यकर्ता एक खास तरह के उद्देश्य के लिए सक्रिय होते हैं। उनकी कहानी में समाज की कुछ वास्तविक समस्याओं और उनके समाधान के लिए किए जाने वाले प्रयासों का उल्लेख होगा। इन कहानियों का लक्षित समूह मीडिया, वेबसाईट, समाचार–विचार पोर्टल भी हो सकते हैं। सरकार के प्रतिनिधियों और नीति निर्माताओं को भी जमीनी वास्तविकताओं को समझने में इनसे मदद मिल सकती है।

उक्त संस्थाओं की अपनी वेबसाइट पर इनका प्रकाशन करना बेहद उपयोगी होता है।

सामाजिक कार्यकर्ता स्वयं अपना ब्लॉग बना कर इन्हें प्रसारित कर सकते हैं।

कहानी के चार आयाम

सामाजिक आर्थिक बदलाव की कहानी चार पहलुओं/आयामों से मिलकर बनती है–

1. विचार/लक्ष्य
2. समुदाय/पात्र
3. सामाजिक आर्थिक बदलाव की पहल/प्रक्रिया
4. पहल के परिणाम

अपने नियमित काम के साथ समानांतर रूप से यह देखते समझते रहना जरूरी होता है कि हमारे काम के ये चार आयाम कौन से हैं? इन चारों आयामों को एक दूसरे के साथ जोड़कर देखने की जरूरत होती है। अगर इन्हें अलग–अलग देखेंगे तो आपस में रिश्ता नहीं बन पाएगा और कभी कभी ये विरोधाभासी भी दिखाई दे सकते हैं।

कहानियों का कथानक

कहानी – एक

कहानी कुछ भी हो सकती है। मसलन 'आज मैं समुदाय में बातचीत कर रहा था, तब समूह की सदस्य सुनीता ने बताया कि गाँव में 16 वर्ष की एक लड़की की शादी तय हुई थी, लेकिन उस लड़की ने शादी करने से मना कर दिया। वह पढ़ाई करके अपने समाज की लोक संस्कृति को बढ़ावा देने वाला काम करना चाहती थी। सब लोग उस पर दबाव बना रहे थे, लेकिन वह डटी रही। आखिर में परिवार और समाज वालों को मानना पड़ा और उसकी शादी रुक गई'।

हमें यह एक घटना की विषयवस्तु पता चली अब इस घटना की पूरी कहानी समझने की जरूरत है। उस लड़की के मन में क्या था? उसने हिम्मत कैसे जुटाई? क्या उसे किसी ने सहायता प्रदान की? दबाव किस तरह के थे? क्या उसे डर लगा? अगर परिवार और समाज वाले नहीं मानते तो वह क्या करती? संघर्ष के इस अनुभव से क्या उसे कोई नया पाठ सीखने मिला? आदि। ऐसे कई प्रश्न होंगे, जिनके उत्तर मिल जाएं, तो एक बहुत प्रभावी कहानी कही, लिखी जा सकती है।

कहानी - दो

यह माना जाता है कि महिलाएं वाहनों की ड्राइवर और मैकेनिक नहीं हो सकती हैं। यह भारी काम है। यह पुरुषों का काम है। ऐसे काम में उनका सामना और बातचीत पुरुषों से ही होती है, इसलिए महिलाओं को यह काम नहीं करना चाहिए। क्या यही धारणाएं नहीं हैं? ऐसे में इंदौर की 'समान' संस्था ने महिलाओं को ड्राइवर और मैकेनिक के कौशल का प्रशिक्षण देना, उनका विश्वास बढ़ाना और उनके साथ खड़े होना शुरू किया।

अब इंदौर में 50 महिलाएं वाहन मैकेनिक का काम कर रही हैं और 200 महिलाएं टैक्सी चलाने की भूमिका निभा रही हैं। क्या यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक बदलाव की घटना नहीं है? यह बदलाव कैसे आया? क्यों इस तरह की पहल शुरू की गई? संस्था के सामने क्या चुनौतियां आईं? महिलाओं के सामने क्या चुनौतियां आयीं? क्या कभी उन्हें लगा कि यह काम नहीं करना चाहिए था? जब वे यह काम करने लगीं, तो समाज उन्हें किस नजरिए से देखता है? क्या नजरिए में कोई बदलाव आया? अपने परिवार और समुदाय में अब उन्हें किस नजरिए से देखा जाता है? संस्था का उद्देश्य क्या रहा है? ये बहुत जरूरी और बुनियादी प्रश्न हैं,जिनके उत्तर एक बहुत प्रभावी कहानी रचने में मदद कर सकते हैं।

कहानी - तीन

सतना के अवनीश ने ट्विटर पर तीन फोटो और 50 शब्दों में एक कहानी साझा की। कैल्होरा गाँव की कृष्णा मवासी ने कोविड19 महामारी के कारण हुई तालाबंदी के दौरान अपने घर की पोषण वाटिका में उपजने वाली सब्जियां गाँव के उन परिवारों में बांटीं, जिनमें कोई छोटा बच्चा था या कोई गर्भवती महिला या बच्चों को दूध पिलाने वाली माता थी। कृष्णा मवासी को पोषण वाटिका लगाने में एक सामाजिक संस्था ने मदद और प्रशिक्षण प्रदान किया था। जब यह कहानी सोशल मीडिया में आई, तो मुख्यमंत्री और सरकार को इसके बारे में पता चला। सांसद और विधायक ने कृष्णा मवासी से बातचीत-मुलाकात की। उसकी प्रतिबद्धता से प्रभावित होकर गाँव के विकास के लिए जरूरी अतिरिक्त सहायता प्रदान की गई। अपने काम के कारण कृष्णा मवासी को स्थानीय समाज में सम्मान भी मिला। इसके बाद कई राष्ट्रीय समाचार पत्रों में भी कृष्णा की कहानी को स्थान मिला।

कृष्णा मवासी ने यह भूमिका क्यों चुनी? क्या उन्हें किसी तरह की कोई मदद मिली थी? उनके मन में क्या विचार थे? इस तरह का काम करके, अब उन्हें क्या महसूस होता है? जमीनी स्तर पर सामाजिक कार्यकर्ताओं और सामाजिक नागरिक संस्थाओं के द्वारा जो भी किया जा रहा है, उसमें कृष्णा मवासी सरीखे कई पात्र कहानी बन सकते हैं।

कहानी कहना क्यों जरूरी है?

कहानी कहना इसलिए जरूरी है ताकि लोगों के जीवन के साथ जुड़ाव स्थापित किया जा सके। कहानी एक माध्यम होती है, जिससे प्रदेश–देश के किसी कोने में व्याप्त समस्या और उसके समाधान के लिए सामाजिक नागरिक संस्थाओं के प्रयासों से बाकी के समाज को वाकिफ कराया जा सकता है। अन्यथा किसी एक छोटे से हिस्से में चल रही कोशिशें वहीं सीमित होकर रह जाती हैं। उनके सीमित रह जाने से प्रयास का महत्व कम नहीं होता, लेकिन उस प्रयास से पैदा होने वाली ऊर्जा, प्रेरणा और सीखों से बाकी के लोग, सरकार और संस्थाएं वंचित रह जाते हैं।

> सामाजिक–आर्थिक बदलाव के लिए होने वाले काम में एक हिस्सा होता है सिद्धांतों का, प्रक्रिया और तकनीक का। हमें ये सिद्धांत किताबों में उपलब्ध भी हो जाते हैं।

लेकिन दूसरा हिस्सा होता है उन सिद्धांतों के क्रियान्वयन का, उससे जुड़ी हुई वास्तविकताओं का। वास्तव में सिद्धांतों (थ्योरी) से ज्यादा जीवंत होते हैं मैदानी अनुभव। सिद्धांत/थ्योरी सही है या नहीं, यह तो सामुदायिक काम से ही स्पष्ट होता है।

> सामाजिक नागरिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों का अपने काम की, अनुभवों और परिणामों की कहानी कहने से सरकार को, मीडिया को, युवाओं, छात्रों, अध्यापकों को सामाजिक संस्थाओं के काम के बारे में सही–सही समझ बनाने में भी मदद मिलती है। यदि ये कहानियाँ न कही जाएं, तो सामाजिक नागरिक संस्थाओं के बारे में केवल धारणाएं ही बनती हैं। जो ज्यादातर गलत हो सकती हैं।

जो कहानी कही जा रही है, हो सकता है कि उसके विषय में सामाजिक नागरिक संस्था या कार्यकर्ता ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो, लेकिन कहानी में उसका उल्लेख एक सहजकर्ता के रूप में ही होना चाहिए। इस तरह की कहानियों में हम समाज और समाज के लोगों को केंद्र में रखकर बदलाव की कहानी कहते हैं। स्वाभाविक है कि जब यह प्रश्न आएगा कि समुदाय/समूह को किसने प्रशिक्षित किया? किसने प्रेरित किया? तब इसके उत्तर में सामाजिक कार्यकर्ता या संस्था का उल्लेख होगा ही!

कहानियाँ कैसे पहचानी जाएं?

बताने लायक क्या है? – जब भी हमें ऐसा महसूस हो कि अरे! यह तो वास्तव में साझा करने लायक–बताने लायक घटा है? यह तो नई तरह की बात है? सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जब हम स्पष्ट हो जाएं कि हमारे पास एक ऐसा विषय/परिणाम/घटना है, जिसके बारे में दूसरों को, संस्थाओं को, अध्यापकों या अन्य लोगों को जानना चाहिए, उस पर गहरी नजर डालना चाहिए।

सजगता से देखना (अवलोकन) – कहानियों को पहचानने के लिए जरूरी है कि हम बहुत सजगता से अपने आसपास के वातावरण, घटनाओं, लोगों, समूहों और बदलावों को देखें। उसे महसूस करें। अक्सर होता यह है कि सामाजिक कार्यकर्ता अपनी भूमिका को केवल गतिविधि तक सीमित कर लेते हैं। समुदाय में जाने से वापस आने के बीच में वे केवल अपनी गतिविधि तक ही सीमित रहते हैं। गतिविधियाँ आयोजित करना जरूरी है, लेकिन साथ ही यह देखना और जानना भी बहुत जरूरी है कि कौन क्या कह रहा है? क्यों कह रहा है? क्या हुआ और क्यों हुआ? परिस्थितियां क्या हैं? लोग कैसे रहते हैं? लोगों के पास क्या है? कौन बोल रहा है और कौन नहीं बोल रहा है? कई बार आपसी बातचीत में ही कहानियों के लिए कई महत्वपूर्ण विषय उभर आते हैं।

सजगता से दर्ज करना – सामाजिक कार्यकर्ताओं को हर दिन अपने अनुभव लिखने की आदत बना लेनी चाहिए। यह देखिए कि आज ऐसी कौन सी घटना घटी या बात हुई, जो सामान्य सी ही है। इसके साथ ही एक बार पूरे दिन की घटनाओं की फिल्म को पांच मिनिट में अपनी आँखों और सोच में दोहराइए कि आज क्या कुछ खास या विशेष हुआ?

सजगता से सुनना – कहानी की पहचान के लिए एकाग्रता से सुनना बहुत जरूरी है। अपने ऊपर नजर डालिए और थोड़ी पड़ताल करिए। आप पाएंगे कि जब आप किसी से बातचीत कर रहे होते हैं या किसी संवाद में शामिल होते हैं, तब क्या आप उस बात को वास्तव में सुन रहे होते हैं, जो वहां कोई व्यक्ति कह रहा होता है; या आप अपनी किसी बात के बारे में सोच रहे होते हैं? जब आपका दिमाग कुछ और सोच रहा होगा, तब आप दूसरे व्यक्ति की बात सुन नहीं रहे होते हैं। जब हम सुनते नहीं हैं, तब कहानी खोज नहीं सकते हैं।

सजगता से प्रश्न गढ़ना यानी जिज्ञासा – सामाजिक कार्यकर्ता सामाजिक आर्थिक बदलाव की प्रक्रिया में सहजकर्ता की भूमिका निभाते हैं। इस भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाने के लिए जरूरी है कि वह समाज/समुदाय की समस्या और उनके पक्ष को गहराई से जाने। इसके लिए उसमें जानने की जिज्ञासा होना बहुत जरूरी है। समस्या क्या है? क्यों है? किस कारण से है? बाधाएं क्या हैं? आपके अनुसार इसके समाधान क्या है? समाधान के लिए क्या पहल की जा सकती है? जब आपने पहल की तो क्या अनुभव रहा?

गतिविधियाँ कहानी नहीं होती हैं – सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में वे कई गतिविधियाँ संचालित करते हैं। ये गतिविधियाँ अपने आप में कहानी नहीं होती हैं। इन गतिविधियों से उभरकर आने वाले परिणाम कहानी की विषयवस्तु बन सकते हैं। अत: हर दिन परिणाम को देखने की कोशिश की जाना चाहिए। परिणाम जानने के लिए सबसे अच्छे शब्द हैं – आखिर परिणाम क्या आया? परिणाम क्यों आया? परिणाम कैसा आया? क्या हल निकला? यदि यह पहल नहीं की जाती, तो क्या होता?

कहानी का पात्र – हम जो भी कहानी कहना चाहते हैं, उसमें कोई न कोई पात्र जरूर होगा। यह पात्र कोई समुदाय हो सकता है, गाँव हो सकता है, एक महिला या महिलाओं का स्वयं सहायता समूह हो सकता है। जब आप कहानी का विषय चुनते हैं, तब यह जरूर तय कर लीजिए कि उसका मुख्य और सहयोगी पात्र कौन से हैं? किनके बारे में कहानी कही जा रही है? ये पात्र क्या सोचते हैं? इनके नजरिए क्या हैं? इनकी चुनौतियां क्या हैं? ये क्या बदलाव लाना चाहते हैं? इनके मुताबिक बदलाव कैसे आएगा? समस्या के कारण क्या हैं? इन प्रश्नों के उत्तर उनकी कहानी के पात्र ही देंगे। इन प्रश्नों के उत्तर सामाजिक कार्यकर्ता या सामाजिक नागरिक संस्था के प्रतिनिधि नहीं देंगे।

कहानी का स्वरूप

कहानी का विषय – सामाजिक आर्थिक बदलाव पर केन्द्रित कहानी का विषय क्या है? मसलन हम यह बताना चाहते हैं कि समुदाय में पोषण वाटिका के कारण कुपोषण की स्थिति में बदलाव आया। किसी गाँव के लोगों ने मिलकर सामूहिक रूप से बारिश के पानी को रोका, जिससे 50 एकड़ जमीन सिंचित हो गई और गाँव का उत्पादन दोगुना हो गया। इसके कारण वर्ष में छह महीने पलायन करने वाले परिवार अब पलायन पर नहीं जाते हैं। अब गाँव/बस्ती में हर नवजात शिशु को जन्म के एक घंटे के भीतर मां का दूध पिलाया जाता है और छह महीने तक केवल स्तनपान कराया जाता है। स्वास्थ्य और पोषण के सम्बंध में आई चेतना के कारण गाँव में 3 सालों में एक भी बच्चे की मृत्यु नहीं हुई। यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है कि कहानी का विषय बहुत स्पष्ट होना चाहिए।

लोगों/पात्रों के वक्तव्य – कहानी में कहीं जाने वाली बातें कौन कह रहा है – सामाजिक कार्यकर्ता या फिर समुदाय के लोग! यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि सामाजिक कार्यकर्ता समुदाय/लोगों की कहानी कहते हैं। अत: सामाजिक आर्थिक बदलाव कैसे आया? क्या चुनौतियां सामने आईं? आखिर में परिणाम क्या आया? इन प्रश्नों के जवाब समुदाय की तरफ से आना चाहिए। जो भी व्यक्ति/महिला/समुदाय प्रतिनिधि इन प्रश्नों का उत्तर दे रहा है, उनके नाम से ही वक्तव्य दर्ज किए जाने चाहिए।

प्रक्रिया क्या रही? – सामाजिक आर्थिक बदलाव का जो भी काम हुआ, उसमें निश्चित रूप से एक प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया का ठोस किन्तु बहुत संक्षिप्त वर्णन कहानी में आना चाहिए। यह याद रखिए कि यह वर्णन कहानी के कथानक से सीधे सीधे जुड़ा होना चाहिए। हमें प्रक्रिया के सभी चरणों का विस्तृत वर्णन करने की जरूरत नहीं होगी। प्रक्रिया से सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक और मुख्य चरणों का संक्षिप्त उल्लेख पर्याप्त होगा।

क्या समस्याएं आईं और उनका सामना कैसे किया गया? – जिस तरह के विषय पर हम काम कर रहे हैं, उसमें अलग-अलग तरह की समस्याएं/ चुनौतियां/बाधाएं आती हैं। हमारी कहानी में ऐसी मुख्य चुनौतियों/ बाधाओं का भी उल्लेख किया जाना चाहिए। इसके साथ ही यह भी बताना चाहिए कि उनका हल कैसे खोजा गया? हमारे कहानी कहने का एक महत्वपूर्ण मकसद यही होता है।

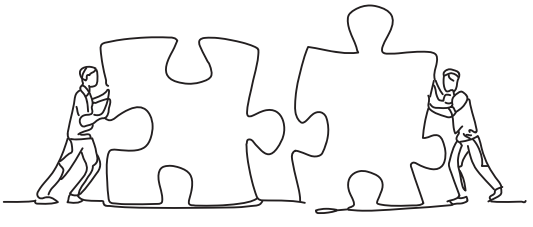

तथ्यों/आंकड़ों का उपयोग – हमारी कहानी में जहां भी समस्या की व्यापकता या फैलाव का उल्लेख किया जा रहा है, वहां तथ्यों और आंकड़ों का उपयोग किया जाना चाहिए। इससे समस्या के प्रभाव के बारे में समझ बनती है। इसके साथ ही बदलाव के दावे को स्थापित करने के लिए भी तथ्यों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। समुदाय के प्रतिनिधियों के वक्तव्य भी तथ्य का ही एक स्वरूप होते हैं।

मूलभूत बातें

पूर्व तैयारियां

सामाजिक कार्यकर्ता को अपने काम के दौरान या किसी भी संवाद में शामिल रहते हुए ज्यादा से ज्यादा बातें अपनी डायरी में दर्ज करने की आदत डालना चाहिए।

- जब समुदाय के साथ बातचीत करते हैं या किसी बैठक में शामिल होते हैं, तब जिस व्यक्ति ने जो बात कही, उसे ज्यों का त्यों ही दर्ज करना चाहिए, नाम के साथ!
- कहानी लिखने से पहले अपनी कहानी के विषय और उसकी मूल बात के बारे में स्पष्ट हो जाना चाहिए।
- कहानी के मुख्य पात्रों का चयन कर लें। एक लेखक होने के नाते सामाजिक कार्यकर्ता को यह स्पष्ट होना चाहिए कि उसकी कहानी का पात्र किन कारणों से महत्वपूर्ण है?
- कहानी में कौन-कौन से तथ्य और वक्तव्यों का इस्तेमाल होगा, यह तैयारी भी पहले से होना चाहिए।

कहानी लिखने के दौरान

- अपनी कहानी लिखने के लिए माकूल समय और शांत स्थान का चयन करें।
- लिखाई के दौरान कहानी के विषय और उसकी प्रक्रिया को अपने मन में दो-चार बार घुमाएं ताकि कहानी की प्रस्तुति भी व्यवस्थित हो सके।
- लिखते हुए ही बीच-बीच में कहानी को शुरुआत से पढ़ लें, ताकि कहानी का बहाव बना रहे।
- कहानी लिख लेने के बाद कम से कम तीन बार एक पाठक के रूप में पढ़िए।

कहानी तैयार होने के बाद

- जब आपको लगता है कि आपकी कहानी पूरी हो गई है, तब इसे समीक्षा या सुझावों के लिए कुछ लोगों को पढ़वाइए। ये संस्था के साथियों, किसी पत्रकार या किसी संपादक से भी पढ़वाई जा सकती है।
- आपको जो भी प्रतिक्रियाएं मिलती हैं, उन्हें समझने और स्वीकार करने की कोशिश कीजिए। इससे आपकी कहानी बेहतर रूप ही लेगी।

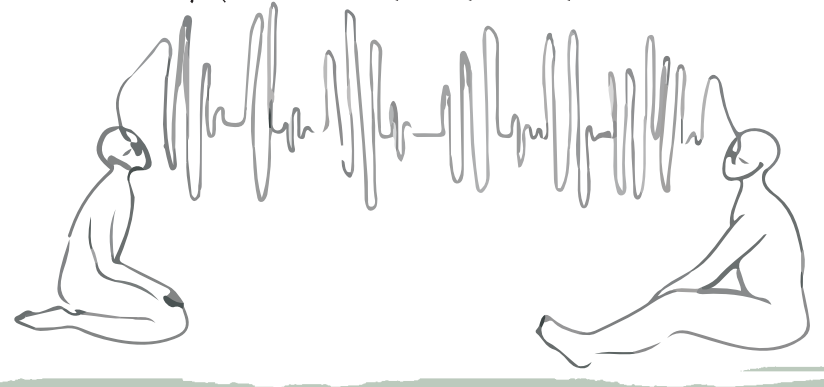

कहानी में फोटो और फोटो में कहानी

- जो भी कहानी कही जा रही है, उसके साथ प्रभावी फोटो जोड़ना बहुत जरूरी है।
- जिन लोगों/व्यक्तियों के वक्तव्य कहानी में दिए जा रहे हैं, उनके साफ-स्पष्ट फोटो जरूरी उपयोग में लाएं।
- कहानी में जो भी प्रक्रियाएं/गतिविधियां सबसे महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं, उनके अच्छे और प्रभावी चित्रों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- क्या आप बदलाव को फोटो में दिखा सकते हैं? इसके लिए तीन तरह के फोटो चाहिए – काम/पहल के पहले का फोटो, काम/पहल के समय का फोटो और काम/पहल के बाद का फोटो। ये तीनों फोटो यदि एक ही कोण से लिए जाएं, तो तीन चित्र बदलाव का चित्र खींच देते हैं।

कहानी लिखने के नियम

- कहानी का विषय तय करना पहला कदम है। अपने आसपास देखते रहिए। देखने से ही कहानी लिखने की शुरुआत होती है।
- विषय का चुन लिया जाना जरूरी है।
- कहानी को एक बार में ही बैठकर पूरा लिखा जाना चाहिए। उसमें सुधार या सम्पादन का काम थोड़ा रुक कर किया जा सकता है। अगर एक बार की बैठक में कहानी पूरी नहीं की जाती है, तो उसे प्रभावी बनाने में बहुत मुश्किल होगी। अत: जरूरी है कि कहानी तैयार करने से पहले वे विषय, पात्र और उनके वक्तव्यों, कहानी के स्वरूप, तथ्य और आंकड़ों को तैयार करके ही बैठें।
- कहानी को प्रभावी बनाने का एक मात्र नियम है – अभ्यास, जितनी बार लिखेंगे, कहानी भी निखरती जाएगी लिखने वाला भी! हर हफ्ते कम से कम एक कहानी लिखिए।
- कहानी का संदेश बहुत स्पष्ट होना चाहिए।
- कहानी का शीर्षक भी खुद ही तैयार कीजिए।
- कहानी को पाठक के नजरिए से पढ़िए। कम से कम तीन बार पढ़िए।
- एक बार ऐसे पढ़िए, जैसे कहानी में लिखे गए हर वाक्य का उद्देश्य और मतलब खोजने की कोशिश कर रहे हों। जिस वाक्य का कोई उद्देश्य या मतलब न दिखे, उसे हटाने पर विचार कीजिए।